सिंचाई:-

सरसों की फसल में दो से तीन सिवाई का प्रबंधन कर उपज में वृद्धि किया जा सकता है पहली सिचाई 25 से 30 दिनों में दूसरी सिंचाई 60 से 70 दिनों में जब फली बनना शुरू हो, तब कर लेने से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

फसल की कटाई:-

सरसों की फसल 120 से 150 दिन में पक कर तैयार हो जाती है अत: इस फसल की समय से कटाई अति आवश्यक है अन्यथा पलियाँ चटकने लगती है एवं उपज में 5 से 10 : को कमी हो जाती है। पौधों की पतियों एवं फलियों का रंग पीला पढ़ते ही इनकी कटाई कर लेना चाहिए। फसल की कटाई के समय यह ध्यान देना अति आवश्यक है। कि सत्यानाशी प्रदुशित खरपतवार के बीज इनके बीजों के साथ ना मिले अन्यथा दूसरी तेल से मनुष्य में ड्रोपसी नामक बीमारी हो सकती है और सरसों के टहनियों को काटकर बंडल बना ले फिर खलिहान में इनके बीज निकाल लें एवं उचित नमी 8 : बनाए रखते हुए इनका मंडारण कर लें।

कीट एवं रोग प्रबंधन :-

कीट एवं रोग प्रबंधन करने के लिए गर्मियों में खेतों की गहरी जुताई करें तथा रोग ग्रसित फसल अवशेषों तथा कूड़ा करकट को खेत से निकाल कर नष्ट कर लें। फसल चक्र अपनाएँ एवं साफ और रोग मुक्त प्रमाणित बीजों का प्रयोग करें। इनके बीजों की बुवाई 25 अक्टूबर तक अवश्य करें।

- ❖ काला धब्बा रोग की रोकथाम के लिए मैन्कोजेब (इंडोफिल एम –45) फफूंदीनाशी का 2.5 ग्राम को प्रति लीटर पानी में घोल कर छिडकाव करें।
- ❖ सफेद रतुआ रोग एवं मृदरोमिल आसिता की रोकथाम के लिए मैनकोजेब (इंडोफिल एम 45) या रेडोमिल एम जेड 75 : डब्ल्यूपी फफूंदनाशक दवा का 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें।
- ❖ आरा मक्खी की संख्या को नियंत्रित करने के लिए समय से सिंचाई दें।
- ❖ चितकबरा कीट एवं आरा मक्खी के नियंत्रण के लिए निकाय गुडाई अवश्य करें।
- ❖ चंपा या माहुलाही के शुरुआती आक्रमण के समय इनसे ग्रसित डालियों को तोडकर नष्ट कर दे।
- ❖ परमक्षी कीट कोकिसमेला सेप्टेमपंकटेटा काईसोपलो कार्निया सिरफिड मक्खी दिखाई दे तो अनावश्यक कीटनाशक का प्रयोग ना करें इन कीटों को संरक्षित करें। लाही का प्रकोप यदि 10 : से अधिक दिखलाई पढने पर इमिडाक्लोप्रिड का 3 मिलीलीटर, 10 लीटर पानी में घोल कर छिडकाव करें।

उपज एवं आर्थिक लाभ :-

सरसों की खेती यदि उपरोक्त उन्नत विधि से की जाए तो औसतन 13 से 15 क्विंटल उपज की प्राप्ति हो सकती है। सरसों की खेती एक हेक्टेयर में करने से 30,000 रुपया खर्च आता है और प्रति किलोग्राम सरसों का भाव यदि 50 रू किलो हो तो 51,000 रुपया शुद्ध लाभ कमाया जा सकता है।

लेखक

डॉ0 अनिल कुमार, वैज्ञानिक (उद्यान) प्रधान, के0वी0के0, धनबाद
डॉ0 आदर्श कुमार श्रीवास्तव, वैज्ञानिक (प्रसार शिक्षा) के0वी0के0, धनबाद
डॉ नवीन कुमार, वैज्ञानिक (पौधा संरक्षण) के0वी0के0, धनबाद
डॉ नन्दना कुमारी, वैज्ञानिक (गृह विज्ञान) के0वी0के0, धनबाद
श्री रमन कुमार श्रीवास्तव (कार्यक्रम सहायक) के0वी0के0, धनबाद
श्री संजय कुमार (प्रक्षेत्र प्रबंधक) के0वी0के0, धनबाद
श्री देव प्रकाश शुक्ला (सहायक) के0वी0के0, धनबाद

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
कृषि विज्ञान केन्द्र, धनबाद
मोबाईल नं0 : +91 9431176741

संकुल अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण तेलहन अंतर्गत
तकनीकी प्रसार पुस्तिका - 5/2025-26

सरसों की उन्नत खेती

कृषि विज्ञान केन्द्र

धनबाद (बलियापुर)

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, राँची

सरसों अथवा राई फसलों का भारतीय अर्थव्यवस्था में एक विशेष स्थान है इनकी गिनती भारत की प्रमुख तीन तिलहनी फसलों यथा सोयाबीन, मूंगफली में होती है जो देश में आई पीली कांति के लिए जाने जाते हैं विश्व के कुल सरसों उत्पाद का लगभग 34% भाग भारत में पैदा होता है एवं यह संसार का सबसे बड़ा सरसों उत्पादक देश है। हमारे देश में 2016–17 से 2020–21 तक तिलहन फसलों के क्षेत्रफल में 251.80 लाख हेक्टर, पैदावार में 1233 किलोग्राम प्रति हेक्टर एवं उत्पादन में 310.50 लाख मैट्रिक टन की बढ़ोतरी दर्ज की गई जबकि तिलहनी फसलों की मांग उपरोक्त समय में 246.16 लाख टन था इस प्रकार देखा जाए तो उत्पादित तेल जो मात्र 111.64 लाख टन था, से इनकी मांग की पूर्ति नहीं हो पाई थी। अतएव शेष 134.52 लाख टन तेल की आपूर्ति अन्य देशों से आयात करके पूरा किया गया।

सरसों एवं राई की बात करें तो इनका खाद्य तेलों में एक महत्वपूर्ण स्थान है और यह फसल अन्य फसलों की तुलना में कम लागत के साथ अधिक आर्थिक लाभ देने वाली फसल है। सरसों की खेती मिश्रित एवं दो फसली वक्र से आसानी से की जा सकती है इसकी खेती सिंचित एव सरक्षित नमी वाले क्षेत्रों में आसानी से की जा सकती है। सरसों के बीज, तेल, खल्ली एव तने सभी को उपयोग में लाया जाता है। बीज एवं तेल खाद्य के रूप में, खली को पशुओं के चारा एवं सूखे तने को इघन के रूप में प्रयोग किया जाता है। विभिन्न किस्मों के अनुसार सरसों के बीज में तेल की मात्रा 30 से 48: तक पाई जाती है। अत: सरसों की उत्पादकता, गुणवत्ता और उत्पादन को बढ़ाने अथवा घटाने वाले प्रमुख कारकों में किस्मों का महत्वपूर्ण स्थान है. साथ ही रोगों एवं कीटों का सही समय पर पहचान कर रोकथाम का भी प्रभाव का इनके उत्पादन पर होता है।

इसी संदर्भ में राई सरसो अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर, राजस्थान द्वारा सराहनीय प्रयास देश के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में आदिवासी उपयोजना के तहत सरसों की खेती को बढावा देने के लिए प्रत्यक्षण, प्रशिक्षण, किसान, गोष्ठी, किसान दिवस, अंतर राज्य परिभ्रमण, किसानों की क्षमता को बढ़ाने के लिए खेती में उपयोग होने वाले छोटे यत्रों एवं बीज भडारण ड्रम का प्रत्यक्षण किया जा रहा है।

किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रत्येक साल सरसों किसान मेले का भी आयोजन किया जा रहा है ताकि अन्य किसान भी सरसों की खेती करने के लिए अग्रेशित हो सके। परियोजना अंतर्गत तेल की पिराई मशीन लगने से किसान बीज का प्रयोग तेल एवं खल्ली खुद के उपयोग के लिए कर रहे हैं ना कि बीज को कम दाम में बेचने को मजबूर है। अत: सरसों की खेती को बढ़ावा देने एवं किसानों को तकनीकी रूप से सक्षम बनाने के लिए विस्तार से सरसों की खेती एवं प्रबंधन की जानकारी यहां दी जा रही है।

जलवायु एवं मिट्टी :-

सरसों की खेती जाने में की जाती है एवं इसकी अच्छी खेती के लिए 18–25 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है इसके फूल आने के समय वर्षा अधिक आद्रता एवं वातावरण में बादल का छाए रहना नुकसानदेह है क्योंकि इससे माहू या चंपा कीटों का अधिक प्रकोप हो जाता है। जिससे सरसों की फसल का उत्पादन घट जाता है। इसकी खेती अच्छी जल निकारा, जल धारण क्षमता वाली दोमट एवं हल्की दोमट मिट्टी में की जा सकती है। अत्याधिक अम्लीय या क्षारीय मिट्टी इसकी खेती के लिए उपयुक्त नहीं है।

उपयुक्त किस्में :-

किस्मे इस क्षेत्र के लिए सरसों की उपयुक्त किस्में एन. आर. सी. डी. आर– 2 (भारत सरसों) एन. आर. सी. एच. बी. 101 (भारत सरसों–2) पूसा बोल्ड, पूसा 28, पूसा 30 और बिरसा मामा सरसों है।

भूमि की तैयारी :-

सरसों की खेती समतल एवं अच्छे जल निकास वाली बलुई दोगट से दोमट मिट्टी में की जा सकती है खेत की जुताई दो से तीन बार कर पाटा चला ले। जिससे खेत की मिट्टी मूरमूरा हो जाए। प्रति एकड़ 1 से 2 क्विंटल डोलोमाइट या बुझा हुआ चुना का उपयोग मई–जून महीना में कर खेत की मिट्टी की अम्तियता को कम किया जा सकता है। भूमिगत कीटों को नियंत्रित करने के लिए 1.5 क्विंटल प्रति एकड़ की दर से नीम की खल्ली का प्रयोग किया जाना चाहिए।

बीज बुवाई का समय मात्रा एवं मिट्टी उपचार :-

सरसों की बीज की बुवाई का उचित समय मध्य सितंबर से लेकर अक्टूबर अंत तक है। एक एकड़ में सरसों को लगाने के लिए 2 किलो ग्राम बीज की आवश्यकता होती है एवं बीजों के अच्छे अंकुरण के लिए अधिकतम तापमान 32 से 33 डिग्री सेल्सियस तापमान की आवश्यक्ता होती है। इनके बीजों की कार्बोडाजिग (1.5 ग्राम/किलो बीज) या बेमिस्टीन (2.0 ग्राम/किलो बीज) नामक रसायन से उपचारित करके लगाएं। मिट्टी जनित रोगों की रोकथाम के लिए ट्राइकोडरमा विरिहि फफूंद नाशी का प्रयोग 8 से 10 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से करें।

खाय/उर्वरकों का प्रयोग :-

सरसों की फसल में अनुशंसित खाय का प्रयोग मिट्टी जांच के आधार पर करने से फसल के उपज में वृद्धि के साथ–साथ आर्थिक क्षति से भी बचा जा सकता है गोबर की सड़ी खाद को बुवाई के करीब 1 महीने पहले खेतों में 1.6 टन प्रति एकड़ की दर से डालकर अच्छी तरह जुताई कर ले। अनुशंसित उर्वरकों में नेत्रजन: स्फुर पोटाश क्रमश: 32 :24 :16 किलोग्राम प्रति एकड़ है जिनको यूरिया डीएपी: म्यूरेट अश्वफ पोटाश के रूप में क्रमश: 49 :52 :27 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें। जिले में मिट्टी की अमलीयता को देखते हुए।

8 किलो प्रति एकड़ की दर से सल्फर का प्रयोग बीजों की गुणवत्ता एवं रोग प्रतिरोध क्षमता बढ़ाने के लिए किया जाना अति आवश्यक है। फारफोरस की आपूर्ति के लिए डीएपी के स्थान पर सिंगल सुपर फश्वस्फेट का प्रयोग लाभप्रद है क्योंकि अलग से सल्फर देने की आवश्यकता इससे नहीं होगी। इस सरसो के बीजों को पंक्तियों में 30 सेंटीमीटर और 10 सेंटीमीटर पौधों की दूरी को बनाते हुए लगाएं इससे पौधा का विकास अच्छे से होगा एवं डश्वलिया भी अधिक बनेगी। रासायनिक उर्वरकों में डीएपी और म्यूरेट अश्वफ पोटाश के साथ सल्फर का प्रयोग बीज गिराने से पहले कतारों में करें। यूरिया की मात्रा को दो भागों में बांट कर, पहला भाग को 25 से 30 दिनों के अंतराल पर और शेष भाग का मूरकाव 40 से 45 दिनों में करें सुक्ष्म पोषक तत्व में जिंक की कमी होने पर बीज की बुवाई से पहले 12 किलोग्राम प्रति एकड के हिसाब से जिंक सल्फेट का प्रयोग किया जाना चाहिए और बोरन की कमी होने से बीरेक्स का 4 किलोग्राम प्रति एकड़ का प्रयोग बुवाई से पहले मिट्टी में मिला कर करें। उपरोक्त पोषक तत्वों का प्रयोग कर सरसों के उत्पादन में वृ) किया जा सकता है।

जैविक खाद :-

मिट्टी की नमी और उर्वरक्ता बनाए रखने के लिए जैविक खाद यथा बेंचा, सनहिम्प, ग्लारिसीडिताया अथवा टैफरोसिया के बीजों को वर्षा शुरू होते ही खेतों में डालकर 35 दिनों में अर्थात फूल आने से पहले उसी खेत की मिट्टी में मिला देने से अनुवांशिक उपज की प्राप्ति हो सकती है। इनकी बीज दर 6 से 7 किलोग्राम 1 एकड़ के लिए काफी है। जीवाणु खाद यथा पीएसबी द्धस्फुर गोलक जीवाणुऋ एवं एजोटोयक्ता 10–15 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीज उपचार कर, मिट्टी में नेत्रजन एवं स्फुर की उपलब्धता को बढ़ाया जा सकता है।

पौधो का विरलीकरण :-

सरसों के बीज के बुवाई के 10–15 दिनों के बाद इनका विरलीकरण आवश्यक है ताकि इनके पौधों का समुचित विकास हो सके। दो पौधों के बीच की दूरी को 10–15 सेंटीमीटर रखते हुए बीजों को लगाने से पौधों की बढ़वार अच्छे होने से डालियां भी अधिक बनती है।

खरपतवार नियंत्रण :-

खरपतवार या जंगली पौधों को खुरपी, हैंड हो या खरपतवारनासी रसायनों द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है खरपतवार नासी रसायन पलुक्लोरालीन 45 ईसी. 1 लीटर सक्रिय तत्व को प्रति हेक्टेयर की दर से 600 लीटर पानी में घोल बना कर बीज की बुवाई से पहले मिट्टी में छिड़काव करना चाहिए या पेंडी मिचेलिन (आईसी) दवा का 1 लीटर सक्रिय तत्व के 600 लीटर पानी के की दर से बीजों की बुवाई के एक–दो दिनों को प्रति हेक्टेयर बदर छिड़काव करें।